International Journal of Home Science 2023; 9(1): 334-336

International Journal of Home Science

ISSN: 2395-7476
IJHS 2023; 9(1): 334-336
© 2023 IJHS
www.homesciencejournal.com
Received: 18-03-2023
Accepted: 25-04-2023

उर्वशी कोइराला
शोधार्थी एम० ए० नेट, ल० ना० मि० वि०, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

डॉ. दिव्या रानी हंसदा
शोध निर्देशिका, विभागाध्यक्ष, गृह विज्ञान संकाय, ल०ना० मिथिला विश्वविद्यालय, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
उर्वशी कोइराला
शोधार्थी एम० ए० नेट, ल० ना० मि० वि०, कामेश्वरनगर, दरभंगा, बिहार, भारत

पारिवारिक संरचना में परिवर्तन से बच्चों पर पड़ रहे प्रभावों का विश्लेषण

उर्वशी कोइराला, डॉ. दिव्या रानी हंसदा

सारांश
आधुनिक समय में परिवार के संरचना तथा प्रकारों में परिवर्तन हो रहा है। आधुनिकता, नगरीकरण और बढ़ते उपभोक्तावाद के कारण परिवार विघटित हो रहे हैं। संयुक्त परिवार हमारे समाज की रीढ़ है, वर्तमान में परिवारों का विघटन हमारी पारिवारिक शक्ति को क्षीण कर रहा है। यह हमारी संस्कृति के मूल्यों से मेल नहीं खाता है। परिवार हमारी शक्ति और आंतरिक ऊर्जा का केंद्र है। परिवार से ही हमारे भीतर सद्गुणों का विकास होता है। बच्चों के विकास में परिवार का बहुत बड़ा योगदान होता है। बच्चे का निर्माण और विकास परिवार में होता है। वह परिवार में जन्म लेता है और उसी से उसको पहचान तथा अच्छे बुरे लक्षण सीखता है। बच्चे पर प्रथम प्रभाव परिवार के माहौल का ही पड़ता है। यदि पारिवारिक माहौल अच्छा है तो वह तेजी के साथ मानसिक रूप से सबल होने लगता है। उसकी बौद्धिक एवं आध्यात्मिक क्षमता में सकारात्मक परिवर्तन देखा जा सकता है। इसके विपरीत यदि परिवार का माहौल ठीक न हो तो बच्चा टूटने लगता है। उसका विकास अवरुद्ध होने लगता है। वह मानसिक एवं बौद्धिक रूप से कमजोर होने लगता है। उसके स्वभाव में नकारात्मकता आने लगती है। वह उदिग्न रहने लगता है। कभी कभी वह हिंसक भी हो जाता है। जीविकोपार्जन के लिए भटकते लोगों के पास समय का अभाव, बच्चों को परिवार से निकाल कर हॉस्टल तक पहुंचा दिया है। छोटे–छोटे बच्चे जिन्हें परिवार में अपनों से कदम–कदम पर जो स्नेह और शिक्षा मिलना चाहिए था, उससे वंचित रह गए। जिसके कारण उन्हें पारिवारिक जिम्मेदारियों की शिक्षा नहीं मिल पा रही है जिससे बड़े होकर वे पारिवारिक रिश्तों की अहमियत को समझ नहीं पा रहे हैं।

कूटशब्दः पारिवारिक संरचना, बच्चों पर पड़ रहे प्रभावों, बच्चे का निर्माण और विकास

प्रस्तावना
परिवार हमारे समाज की पहली इकाई है। लेकिन आधुनिकता और भौतिकता की दौड़ में आज परिवार का स्वरूप छोटे–छोटे हो होते जा रहे है। आने वाले समय में हमारे समाज की इस इकाई का क्या स्वरूप होगा कहा नहीं जा सकता। लेकिन किसी भी दशा में किसी भी समाज की पहली इकाई परिवार है। परिवार की मूलभूत भूमिका बच्चों का लालन पालन है जो अपने आध्यात्मिक विकास और सभ्यता के विकास में अपनी प्रतिभागिता दोनों की जिम्मेदारी ले सकते हैं। मूल्यों के विकास में परिवार वह पहली सीढ़ी है जिस पर चढ़कर मानवीयता के लक्ष्य को पाना आसान लगता है। परिवार मानव समाज का नाभिक है जो प्रशंसनीय गुणों और क्षमताओं के विकास के लिये यह एक आवश्यक वातावरण प्रदान करता है। इसके सद्भावपूर्ण वातावरण में काम करने और परस्पर प्रेम के बंधन को बनाये रखने तथा विकसित होते रखने से इसके सदस्य एक दूसरे के करीब आते हैं। यह लगातार इस सत्य को मुखर करता है कि व्यक्ति के कल्याण के तार दूसरों के कल्याण और प्रगति से जुड़े हैं। दुनियां के हर समाज में परिवार को महत्व दिया गया हैं हाँ इसका स्वरूप अलग–अलग जगहों पर अलग तरह का है। इसीलिए परिवार कब, कैसे, कितना और किस प्रकार के मूल्यों को देना चाहता है यह प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है। 6 वर्ष तक की आयु एक ऐसा पायदान है जब बच्चा दूसरों के आचरण से सबसे अधिक प्रभावित होता है। इसलिये प्राथमिक स्तर के मूल्य इसी उम्र में निर्धारित होते हैं। हालांकि बाद में भी मूल्य विकसित होते हैं लेकिन प्रभाव का स्तर धीरे–धीरे कम हो जाता है। प्रशिक्षण, प्रोत्साहन, निंदा व दंड कुछ ऐसे उपकरण हैं जिनसे ये मूल्य विकसित किये जा सकते हैं। यह भी ध्यान देने योग्य है कि परिवार एकल है या संयुक्त। संभव है एकल परिवार से व्यक्तिक होने का मूल्य प्राप्त हो और संयुक्त परिवार के साथ रहने का परिवार का शैक्षणिक स्तर और आर्थिक स्तर भी मूल्यों की पृष्ठभूमि तय करने में सहायक होते है। बच्चे के विकास में माँ की सबसे बड़ी भूमिका रहती है। बच्चा पैदा होने के बाद से माँ के आँचल में रहते हुऐ भी सीखना शुरू कर देता है। माँ की लोरियाँ उसे सिर्फ सुलाती नहीं उसके अंदर प्रारंभ से ही सुनने, ध्यान देने और समझने की क्षमता भी

विकसित करती है। दूसरी ओर माता–पिता, दादा–दादी, नाना–नानी द्वारा सुनायी गयी कहानियाँ उसका नैतिक चारित्रिक विकास करने के साथ ही उसके अंदर मानवीय मूल्यों की नींव भी डालती है। इसीलिए माँ को पहली शिक्षक भी कहा जाता है।

भारतीय समाज में परिवार का विशेष महत्व हैं किन्तु इसके भी अधिक महत्व भारतीय समाज में संयुक्त परिवार का रहा है। संयुक्त परिवार में प्रत्येक व्यक्ति को जिम्मेदारी होती हैं। स्वास्थ्य संबंधी समस्या हो या आर्थिक, सामाजिक सुरक्षा, सभी लोग मिलकर वहन करते है। कोई अकेला व्यक्ति परेशानी नहीं उठाता। इससे कोई व्यक्ति पर तनाव नहीं बढ़ता हैं। पूरा परिवार एक शक्ति ग्रह की भांति होता हैं। जो सामाजिक सुरक्षा का कार्य करता है। संयुक्त परिवार में बच्चे कैसे बड़े हो जाते हैं पता ही नही चलता। मनोरंजन, त्योहार, उत्सव आदि गतिविधियाँ होते रहते हैं। उन्हे दादा, दादी आदि लोगों का अपार प्यार मिलता है। इसलिए परिवार को प्यार का मंदिर कहा जाता है। प्यार के साथ–साथ उनका ज्ञान अनुभव अनुशासन आदि बहुत कुछ बच्चे को मिल पाता है। बच्चों को संस्कारवान बनाने, चरित्रवान बनाने एवं उनके नैतिक विकास में संयुक्त परिवार का विशेष योगदान होता है जो कि एकाकी परिवार में कभी भी संभव नहीं है। संयुक्त परिवार में कौशल भी सिखाया जाता है। साम्य श्रम विभाजन देखा जा सकता है। परिवार एक नियामक संस्था, भी है जो घर के सभी सदस्यों को अनुशासित और नियंत्रित रखती है।

बच्चे के विकास पर उसके परिवार तथा वातावरण का बहुत ज्यादा असर पड़ता है। कुछ खास बातें ऐसी है जो हर परिवार में पाई जाती है। चाहे वह छोटा हो या बड़ा परिवार इन सब बातों का असर बच्चे के पूरे व्यक्तित्व विकास पर सीधे पड़ता है। इन बातों का परिवार के आर्थिक स्तर, गरीबी–अमीरी से कोई मतलब नहीं है।

सारणी 1: पारिवारिक संरचना में परिवर्तन से बच्चों पर पड़ रहे प्रभाव

परिवारिक संरचना	Opinion (अभिमत)			
	Yes (हाँ)		No (नहीं)	
	Number (संख्या)		Number (संख्या)	
Joint (संयुक्त)	92	Joint (संयुक्त)	92	Joint (संयुक्त)
Nuclear (एकाकी)	122	Nuclear (एकाकी)	122	Nuclear (एकाकी)
Total (कुल)	214	Total (कुल)	214	Total (कुल)
Total (कुल) %	71.34 %		Total (कुल) %	

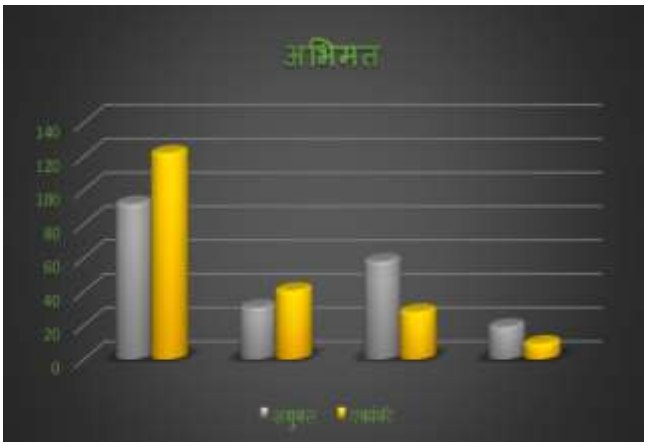

सारणी 1: पारिवारिक संरचना में परिवर्तन से बच्चों पर पड़ रहे प्रभाव

सारणी संख्या–1 से प्राप्त तथ्यों से यह ज्ञात होता है कि 71.34 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने उपरोक्त प्रश्न का उत्तर हाँ तथा 28.66 प्रतिशत ने नहीं में उत्तर दिया है।

बच्चों पर परिवार के पड़ने वाले प्रभाव

1. बड़े परिवार में हर उम्र के लोगों के साथ रहना उसके लिए फायदेमंद होता है। परिवार के साथ रह कर ही बच्चा चीजों को देखना परखना, सीखता हैं। उसे नयी बातें सीखने के अवसर मिलते है। वह धीरे–धीरे अपने कामों को समझने लगता है। इतना ही नहीं वह अपनी उम्र के मुताबिक जिम्मेदारी भी उठाना सीखता है। परंतु एकाकी परिवार में यह संभव नहीं होता।
2. बच्चा परिवार में कई लोगों से घिरा रहता है जो उसमें रूचि लेते हैं और जीवन की गाड़ी चलाने में उसके मार्गदर्शक बनते है। बच्चा उनके ही व्यवहार से अलग–अलग उम्र के लायक बातें सीखता है, साथ ही अनुशासित होना भी सीखता है।
3. परिवार में रहने से बच्चे की कल्पना एवं रचना शक्ति बढ़ती है। वह अक्सर दूसरे बच्चों के साथ माता–पिता की नकल करता है। इस तरह परिवार समाज की तरह–तरह की भूमिकाएँ निभाना सीखता है। उसे परिवार समाज के प्रति जिम्मेदारियों का एहसास दिलाने की यह पहली सीढ़ी भी कही जाती है। परिवार बच्चों को सीखने या आगे बढ़ने के जो अवसर देता है, वह उसे किसी जगह नहीं मिल सकते। यह देखा जाता है कि संयुक्त परिवार में रहने वाले बच्चे एकल परिवार से अधिक व्यवहारिक, समझदार, जिम्मेदार और रिश्तों की अहमियत समझने वाले होते हैं। संयुक्त परिवार में बच्चे रीति–रिवाज, मान–सम्मान, आदर–सत्कार और परिस्थितियों के अनुसार व्यवहार करना जल्दी सीखते हैं। इसका मुख्य कारण ये है कि संयुक्त परिवार में बच्चों की देख–रेख के लिए माँ–बाप के अलावा दादा–दादी, चाचा–चाची, बुआ सब रहते हैं जिनकी नजर बच्चों पर रहती है। और वो अपने अनुभव को बच्चों के साथ साझा करते रहते हैं। जिस कारण बच्चा जल्दी सीखता है और उसकी समझ बेहतर होती है। जब आप एकल परिवार में रहते है तो घर का सारा काम आपको खुद ही करना पड़ता है फिर आपके पास समय हो या ना हो। गांवों में रोजगार का अभाव होने के कारण अक्सर एक बड़ी आबादी का विस्थापन शहरों की ओर गमन करता है। शहरों में भीड़–भाड़ रहने के कारण बच्चे अपने माता–पिता को चाहकर भी पास नहीं रख पाते है। इसके अलावा पश्चिमी संस्कृति बुजुर्गो व अभिभावकों के प्रति आदर कम होने लगा हैं। वृद्धावस्था में अधिकतर बीमार रहने वाले माता–पिता अब उन्हे बोझ लगने लगे हैं। वे अपने संस्कारों और मूल्यों से कटकर एकाकी जीवन को ही अपनी असली खुशी व आदर्श मान बैठे हैं। युवा पीढ़ी के ऊपर अनावश्यक पारिवारिक चिताएं और कलह हावी होने की जगह उन्हे देश हित में और समाज हित में सोचने का अधिक से अधिक अवसर मिले ये बाते छोटी हो सकती है लेकिन बहुत महत्वपूर्ण है हमें स्वीकारना होगा कि प्रदूषित आरम्भिक शिक्षा और बढ़ती पारिवारिक कलह के कारण युवाओं के चिंता और डिप्रेशन जैसी बीमारियाँ कम उम्र में हावी होने लगी है। इस तरह से पारिवारिक जिम्मेदारियाँ सम्भालने में आज के युवा कही न कहीं कमजोर पड़ने लगे है। ये बहुत ही चिंता का विषय हैं और आज आवश्यक है कि हम विज्ञान और चिकित्सा के

शिक्षा के साथ–साथ साहित्य और समाज अध्ययन पर भी विशेष ध्यान दें। जिससे हमारी आने वाली पीढ़ी सामाजिक और पारिवारिक जिम्मेदारियों को और भी बेहतर ढंग से समझ सकें।

निष्कर्ष

यह पारिवारिक संरचना पर निर्भर करता है कि बच्चा एकल परिवार का सदस्य है या संयुक्त परिवार का जहां उसे समाजीकृत करने में परिवार के अन्य सदस्यों की भी अहम् भूमिका होती है। अतः परिवार की संरचना न केवल आरंभिक अनुभवों कों प्रभावित करती है बल्कि सामाजिक अभिवृतियों एवं व्यवहारों के संरूपों के विकास पर भी पड़ता है। वे बच्चे जिन्हे परिवार में स्वीकृति मिलती है वे बाहरी परिवेश से भी स्वीकृति की प्रत्याशा करते हैं। परंतु प्रत्याशा के अनुरूप बाहरी लोगों से व्यवहार न मिलने पर बालक आहत होता है। कभी–कभी उग्र भी हो जाता है। वे बच्चे जो घर के बाहर एवं अंदर अस्वीकृति पाते हैं, अन्तमुखी प्रवृत्ति के हो जाते हैं। वही यदि माता–पिता या परिवार के सदस्यों का प्रोत्साहन मिलता है तो बच्चों में बहिर्मुखता विकसित होता है। इस प्रकार बच्चा अनेक सामाजिक व्यवहारों को अर्जित करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. देशबन्धु अप्रैल 2011
2. अभिव्यक्ति दिसम्बर 2017
3. गीता आर्या ''परिवार का महत्व और उसका बदलता स्वरूप'' जुलाई 2018
4. श्रीनारद मीडिया
5. विकास पिडिया